

# विक्रम-प्रकाश

परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

फरवरी 2013

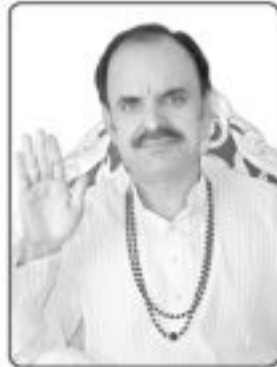
विक्रम संवत् 2069

पाठक की कलम से .....

अपनो से अपनी बात

य आत्मन,

शुभाशीर्वाद।



सांसारिक जीवन में

दुःख के रूप में एक नववर्ष और जुड़ गया। सही अर्थों में वर्ष तो इसी स्थिति के रूप में जुड़ते रहेंगे परन्तु क्या वास्तव आप को अपने जीवन से जोड़ पाये हैं अथवा जिस तरह से इतने वर्ष व्यतीत हो गये उसी तरह यह वर्ष भी व्यतीत हो क्या इससे जीवन में नूतनता नवीनता आ पायी है ?

अनेक अनेक लोगों से बात करें तो वे अपने दुःखी होने के अनेक अनेक अन्तहीन कारण बता देंगे। लोग भविष्य को लेकर भय की वजह और कारण बतायेंगे। वास्तव में दुःख की मुख्य वजह बीते समय का स्मरण ही है। बीते हुए अतीत को हम हर समय हृदय में बनाये रखते हैं और आगे बढ़ते रहते हैं। हम अपने दुःखों और मुसीबतों को याद करते हैं। न जीवन जीते रहते हैं और भविष्य को लेकर चिन्ता और भय ही है। मेरा कार्य कैसा होगा, नौकरी कैसी रहेगी, व्यापार कैसा रहेगा, परिवार के सदस्यों का भविष्य कैसा होगा आदि अनेक अनेक कल की बातों को लेकर अनिश्चितता भरे हुए ये विचार हर दिन और डर पैदा करते रहते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का मूल सार यही बताया है कि चिन्ता न करो, फल की चिन्ता न करें। इसका गूढ़तम अर्थ यह है कि,

कर्म हमारा वर्तमान से जुड़ा हुआ है और वर्तमान में जैसा कर्म करने की स्थिति गड़बड़ा जाती है तो भविष्य सही नहीं होगा नहीं हो सकेगा। संकल्प शक्ति के अभाव के कारण जीवन में चिन्ता है केवल और केवल भविष्य के फल की चिन्ता रहती है जो वर्तमान पर ही टिका हुआ है और जब वर्तमान में ही कर्मस्वरूप भविष्य किसी भी रूप में श्रेष्ठ नहीं बन सकता।

भविष्य की योजना अवश्य बनानी चाहिए परन्तु बनाना चाहिए और वर्तमान में भविष्य की योजना के अनुसार बनी रहनी चाहिए। तभी हम वर्तमान का सही रूप में आनन्द की प्राप्ति हो सकेगी। जितनी संकल्प भाव में दृढ़ता रहेगी उतनी और जब कर्म शक्ति में निरन्तरता का भाव बना रहेगा तो निश्चय और अधिक श्रेष्ठमय बन सकेगा।

भगवान सदाशिव महादेव के बारे में जन जन्म सांसारिक व्यक्ति के जीवन की विषमताओं से मुक्ति दिलाकर पूर्ण सहयोगी हैं और यह भी निश्चित है कि उनकी अनुकम्पा प्राप्त कर सकता। **साधक के जीवन को शिवयुक्त बनाने के लिये महाशिवरात्रि दिवस नहीं हो सकते। शिष्यों और साधकों का परिवार श्रद्धा-सिद्धि और शुभ-लाभ युक्त निर्मित करने हेतु स्वामी महाशिवरात्रि पर्व 8, 9, 10 मार्च 2013 को परमहंस स्वामी साधनात्मक क्रियाएँ संपन्न कर संसार को नवीन चेतना और प्राप्त कर साधक और शिष्यों का जीवन शिव परिवार युक्त श्रेष्ठ**

आप सभी परिवार सहित इस तपोभूमि पर कुंभ महापर्व का शमन कर सकें और हर दृष्टि से जीवन को सांसारिक मनुष्य की इच्छा रहती है कि वह अपने आप को अग्रसर कर सके और उस विशालता को प्राप्त करने के लिए प्रक्रिया सम्पन्न करने से जीवन की लघुता, दीनता और विषमता और व्यक्ति के विशालता ओर पूर्णता की ओर अग्रसर होने वाली रहती है।

कुंभ महापर्व पर आप जीवन को अमृतमय बना सकें और जीवन वसंतोत्तम बना रह सकें। ऐसे श्रेष्ठतम महापर्व पर मंगल कामना और कल्याण कामना करता हूँ।